DATE
PAGE NO

ऑडियो विडियो रिकॉर्डिंग और कलाकार विवरण पत्र

फोल्डर नं.: 09 दिनाँक 26/06/2021

स्थान – लखे की ढाणी

ZOOM0001

ट्रैक समयावधि 11:00 Min.

कलाकार का नाम → (नेकु खाँ) गायन / वादन

पिता का नाम – सिन्धे खा

पता → गांव बड़नावा चारणान् लखे की ढाणी, तह. पचपदरा
जिला बाड़मेर राजस्थान (344032)

सहायक कलाकार →

ऑडियो रिकॉर्डिंग का समय

विषय → कथा (रिड़मल रावत)

विशेष – विवरण –

यह प्राचीन कथा रिड़मल के जीवन से सम्बन्धित है। रिड़मल का एक बड़ा भाई भी था उसका नाम भारमल था। ये बाड़मेर के रेडाना का रहने वाला था बात उस समय की है जब कुछ व्यापारी घोड़े लेकर रेडाना तलाब पहुँचे वहां उनकी मुलाकात रिड़मल जी से हुई तो रिड़मल जी ने उनके ठहरने का बन्दोबस्त किया वो व्यापारी वहा 4-5 महीना रुके। और रवाना होते समय रिड़मल जी से कहा आप हमारे घोड़ो में से अपना मन चाहा घोड़ा ले लो,

उनमें एक गंगा पार घोड़ी भी थी। उसके गर्भ में नव लखे घोड़े का अंश था। रिड़मल जी नइजी (बिलीया) के कहने पर उस घोड़ी को मांगता है। वह व्यापारी उसे वह घोड़ी दे देता है और कहता है रिड़मल जी इसके गर्भ में नव लखे घोड़े का अंश है और ये घोड़ी 15-20 दिन बाद अपने बच्चे को जन्म देगी। आप उस बच्चे की अच्छी देख भाल करना और उसे तल-भंवरे में रखना।

Anand
DATE :
PAGE NO. :

और उसे तब तक बाहर मत निकालना जब तक ये अपना पाव जमीन पर न रखे। रिड़मल जी घोड़ी को लेकर अपने घर जाते है। और 15-20 दिन बाद वह घोड़ी अपने बच्चे को जन्म देती है। धीरे-धीरे वह घोड़ा बड़ा हो जाता है। रिड़मल जी उसकी अच्छी देखभाल करते है, और एक दिन वह घोड़ा अपना पाव-जमीन पर मारता है तो धरती कांपने लगती है। रिड़मल जी अपने घोड़े को लेकर शिकार पर जाते है और हिरणों को पकड़ कर उसके कानों में घुंघरू डाल देता है।

रिड़मल जी ने जितने भी हिरण थे सबके कानों में अपने घोड़े की सहायता से घुंघरू डाल दिये। घुंघरू डाले हुए हिरण सोढों के शहर में पहुँचते है और उस समय सोढ़ी उस हिरणों को देखती है। और कहती है कि अगर मैं शादी करूंगी तो सिर्फ उस आदमी से जिसने हिरणों के कानों में घुंघरू डाले है। अब सोढों को यह देखना था कि यह कौन है जो हिरणों के कानों मे घुंघरू डाल कर छोड़ रहा है।

उसके पास ऐसा कौनसा घोड़ा है। फिर किसी से मालूम होता है कि उसका नाम रिड़मल है और रेडाना मे रहता है। वो सोढे रिड़मल के घोड़े को हराने के मनसूबों से अपनी जेत दौड़ने वाली घोड़ियों को लेकर बाड़मेर के रेडाना मे पहूंचते है। और रेडाना तलाब पर सोढों की मुलाकात रिड़मल जी से होती है। और सोढे बोलते है कि रिड़मल जी आज हम आपके घोड़े और हमारी घोड़ियों की रेस करवायेंगे। और आपके घोड़े को हरायेंगे।

उस समय रिड़मल जी ने कहा वो सब तो ठीक है पर आप हार-जीत पर शर्त क्या रखोगे तो सोढों ने कहा कि अगर हम हार गये तो अपनी घोड़ियों के सर काट कर चले जायेंगे। उस समय रिड़मल जी ने भी कहा की अगर मेरा घोड़ा पीछे रह गया तो मैं इसके ऊपर कभी नहीं चढूंगा। रेस शुरू हो गई सोढों की एक भी घोड़ी रिड़मल के नवलखे के आस-पास भी नहीं थी रेस मे रिड़मल जी का घोड़ा विजय हुआ।

Anand

DATE
PAGE NO

सोढ़े भी वचन के पक्के थे उन्होने अपनी घोड़ियो के सर वही काट दिये। और वापस अमरकोट की ओर चले गये अब सोढ़े को रिड़मल जी से अपनी हार का बदला लेना था। तो सुल्तान सोढ़े ने अपनी बेटी की शादी रिड़मल जी से कराने की सोची के जब रिड़मल जी यहा बरात लेकर आयेगे उस समय हम उनके प्राण ले लगे इस प्रकार अपना बदला भी आ जायेगा। सोढ़े ने ब्राह्मण के हाथो रिड़मल जी के घर नारेल भिजवाया वो नारेल रिड़मल जी के भाई के हाथ लग गया।

रिड़मल जी हमेशा कि तरह शिकार पर गये हुए थे। भारमलजी ने ये बात रिड़मल जी से गुप्त रखी कही हुई तारिख के अनुसार भारमल जी बारत लेकर रवाना हो गये। कुछ समय बाद रिड़मल जी भी घर पहुँचे तो उनको अपनी भाभी ने सारी बात बताई। उस समय भारमल जी बहुत आगे निकल चुके थे। रिड़मल जी ने भी अपने नव लखे को तैयार किया और रवाना हो गया।

सोढ़ो ने अपनी हार का बदला लेने के लिए एक नव-गज की खाई खोद रखी थी। रिड़मल जी ने अपने घोड़े को उस खाई के ऊपर से कुदा दिया और अमरकोट के महल मे प्रवेश किया तो सोढ़ी ने पेहचान लिया कि यही रिड़मल जी है। और भारमल जी की भी वही कहीं शादी करवाई जाती है। इस प्रकार रिड़मल जी सोढ़ी को विवाह कर अपने घर लाता है। और वो दोनो बहुत ही प्रसन्न होते है। घर आने के कुछ ही दिन बाद आसोजी जो की रिड़मल जी का मासी का बेटा भाई था उसके हाथो राव गोगे की नौकरी पर जाने का आदेश आया।

रिड़मल जी नई (बीलिया) और आसोजी के साथ नौकरी पर जाने को तैयार हो गये उस समय सोढ़ी ने उसे रोकने का प्रयास किया। लेकिन रिड़मल जी नही रुके और कहा मै जल्द ही वापस आऊगा। तो सोढ़ी बोलती है अगर आप सावन की तीज तक वापस नही आये तो मै जल कर राख बन जाऊंगी। और रिड़मल जी सोढ़ी को विश्वास देता है की हम आ जायेगे।

Anand
DATE :
PAGE NO. :

रिड़मल और नई जी आसों जी के साथ राव गांगे की 12 साल की नौकरी के लिए चले जाते है। और वहा नौकरी करने लग जाते है। काफी समय बीत जाता है। नौकरी करते हुए। नई जी रिड़मल जी का घोड़ा लेकर अपने बीवी-बच्चों से मिलने आता रहता है। एक दिन रिड़मल जी अचानक घोड़े के पास आते है तो उसको घोड़े पे लगी रेगाना की माटी की महक आती है और वह नई जी से पूछता है कि बिलीया घोड़े की पीठ पर रेगाने की माटी लग हुई है" क्या बात है।

तो वह कहता है कि ठाकर साहब ये तोकल आंधी आई थी। उसी से ये माटी उड़ कर आयी है। धीरे-धीरे समय बीत रहा था। सोढ़ी ने एक पत्र राव गांगे की राणियो को भेजा। उसमें लिखा था। की रिड़मल जी को छुटी दी जाये। ये पत्र राव के हाथों में पहुंचा तो उन्होने कहा की यहां तो सबको रिड़मल काम कर रहे है। हम कौनसे रिड़मल को छुटी दे तब राव ने पत्र वापस भेजा।

भेजा हुआ पत्र कुछ समय बाद सोढ़ी तक पहुंचा तो उस सोढ़ी ने दूसरा पत्र लिखा उसमें लिखा था आप उस रिड़मल को छुटी दो जिसके पास नव लखा घोड़ा है। वह पत्र राव ने देखा। और रिड़मल जी को छुटी देने के लिए वाणी हो गया। और कहा जो रिड़मल है वो अपना घोड़ा गढ़ किनार की दीवार के ऊपर से डाका कर बाहर जाये। उस समय रिड़मल जी ने नव लखे को दीवार के ऊपर से डाका दिया।

और वहा से रवाना हो गया। उधर सोढ़ी सती होने की तैयारी कर रही थी। जैसे ही वह अग्नी में पाव रखने वाली थी। उस ही समय रिड़मल जी वह पहुँच जाते है और सोढ़ी को सती होने से बचा लेता है। इस प्रकार सोढ़ी और रिड़मल जी का मिलन हो जाता है और दोनो हमेशा साथ रहते है।